''ताल सम्राट स्वर्गीय उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली पर विविध घरानों का प्रभाव – एक अध्ययन''

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा से संगीत विषय में
पी–एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध की प्रस्तावित

रूपरेखा

2016

निर्देशक	**शोध छात्रा**
डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी असिस्टेन्ट प्रोफेसर संगीत विभाग	**रजनी**
विभागाध्यक्षा	**संकाय प्रमुख**
प्रो0 सुभद्रा कुमारी सतसंगी	**प्रो0 रागिनी रॉय**

कला संकाय
(संगीत विभाग)
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा

ताल सम्राट स्वर्गीय उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली पर विविध घरानों का प्रभाव – एक अध्ययन

भूमिका

तबला भारतीय संगीत का प्रमुख एवं प्रचलित अवनद्ध वाद्य है। संगीत की कोई भी विधा हो, गायन, वादन व नृत्य सभी ताल के बिना श्रृंगार विहीन नायिका के समान प्रतीत होती है। प्राचीन समय में तबला किस अवस्था में और किस प्रकार प्रयोग में लाया जाता रहा, इस सम्बन्ध में विद्वानों के मध्य सदैव ही अनेक मत–मतान्तर रहे हैं। त्रिपुष्कर वाद्य द्वारा ही तबला वाद्य की उत्पत्ति मानी जाती है, जो कि इसकी सत्यता को प्रमाणित करता है।

संगीत में गुरू–शिष्य–परम्परा को विशेष महत्त्व दिया जाता है। तबला वादन की कला का विकास भी गुरू–शिष्य–परम्परा के माध्यम से ही हुआ है। गुरू–शिष्य–परम्परा का परिवर्तित रूप घरानों के माध्यम से स्पष्ट होता है। तबले के मुख्यतः छः घराने दृष्टिगोचर होते हैं– दिल्ली घराना, अजराड़ा घराना, लखनऊ घराना, फर्रूखाबाद घराना, बनारस घराना एवं पंजाब घराना। इनमें से उपर्युक्त पाँच घराने किसी न किसी रूप में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं किन्तु पंजाब घराने का विकास एक स्वतन्त्र घराने के रूप में हुआ है।

तबला वादन के क्षेत्र में दिल्ली घराना सर्वप्रथम घराना है जो कि मूल घराने के रूप में प्रतिष्ठित है। इस घराने के अनेक कलाकारों ने अपनी योग्यता के आधार पर इस घराने को विकसित करने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया, जिनमें उस्ताद सिद्धार खाँ ढाढ़ी, उस्ताद सिताब खाँ, उस्ताद गुलाब खाँ, उस्ताद फैयाज़ खाँ, उस्ताद बड़े काले खाँ, उस्ताद बोली बख़्श, उस्ताद इनामअली, उस्ताद लतीफ अहमद, उस्ताद शफात अहमद खाँ आदि उल्लेखनीय हैं। दिल्ली के शिष्यों उस्ताद कल्लू खाँ व उस्ताद मीरू खाँ द्वारा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जिस घराने का सूत्रपात हुआ वह अजराड़ा घराने के नाम से संगीत जगत में जाना जाता है। इस घराने के लब्धप्रतिष्ठित

कलाकारों में काले खाँ, चाँद खाँ, उस्ताद शम्भू खाँ, उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ एवं उस्ताद मंजू खाँ का नाम आता है। दिल्ली के ही उस्ताद मोंदू खाँ व उस्ताद बख्शू खाँ ने प्रथक घराने का सूत्रपात किया जो लखनऊ घराने के नाम से विख्यात है। इस घराने के ख्याति प्राप्त कलाकारों में उस्ताद मम्मन खाँ उर्फ मम्मू खाँ, मुन्ने खाँ, उस्ताद आबिद हुसैन, उस्ताद वाजिद हुसैन, उस्ताद आफ़ाक हुसैन, उस्ताद इलमास हुसैन आदि उल्लेखनीय हैं। लखनऊ घराने से पुनः दो धाराएं और विकसित हुईं जो कि फर्रूखाबाद व बनारस के नाम से तबला जगत में विख्यात हैं। फर्रूखाबाद घराना पूरब और पश्चिम की कड़ी के रूप में जाना जाता है। इस घराने के प्रतिष्ठित कलाकारों में उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ, उस्ताद मुनीर खाँ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद शमशुद्दीन खाँ, उस्ताद करामतउल्ला खाँ, उस्ताद साबिर खाँ, उस्ताद अमीर हुसैन खाँ, उस्ताद गुलाम हुसैन खाँ, उस्ताद नन्हे खाँ, मेहबूब खाँ मिरजकर, निखिल घोष आदि अनेकों उत्कृष्ट कोटि के कलाकार हुए हैं, जिन्होंने तबला जगत में अकथनीय योगदान से एक विशेष पहचान दिलाई। वहीं बनारस घराना अपनी जोरदार एवं पखावज—नृत्य प्रधान बोल बन्दिशों के कारण अलग ही अस्तित्व रखता है। इस घराने के प्रसिद्धि प्राप्त कलाकार पं0 रामसहाय, पं0 भैरों सहाय, पं0 अनोखेलाल मिश्र, पं0 सामता प्रसाद उर्फ गुदई महाराज, पं0 शारदा सहाय, पं0 किशन महाराज, पं0 छोटेलाल मिश्र, पं0 शीतल प्रसाद मिश्र आदि ने इस घराने को विकसित किया एवं अपना अमूल्य योगदान दिया। इन सबसे प्रथक पंजाब घराना अपनी वादन शैली एवं विशेषताओं के कारण तबला जगत में अलग ही महत्व रखता है। इस घराने के प्रमुख कलाकार पं0 भवानी दीन, उस्ताद फकीर बख्श, उस्ताद कादिर बख्श, उस्ताद अल्लारक्खा, उस्ताद जाकिर हुसैन हैं जिन्होंने इस घराने को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

दिल्ली घराने पर यदि दृष्टिपात करें तो यह घराना तबले का प्रथम एवं मूल घराना है जो तबला वादन के क्षेत्र में पृथक घराने के रूप में अपना महत्व रखता है। तबला वादन के क्षेत्र में वादन शैली का जो विकास हुआ है उसका सूत्रपात दिल्ली घराने के माध्यम से ही हुआ है, चाहे वह बोल बन्दिशों के माध्यम से, वादन शैली के माध्यम से, कलाकारों के माध्यम से ही क्यों न हुआ

हो ? उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब मुख्य रूप से दिल्ली घराने की वादन शैली के अनुरूप ही प्रस्तुति देते थे तथा दिल्ली घराने के कलाकार कहे जाते थे। अतः उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली पर विविध घरानों का प्रभाव के अध्ययन में दिल्ली घराना मुख्य रूप से शामिल किया गया।

शोध का विषय उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली पर विविध घरानों का प्रभाव से सम्बन्धित है अतः उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली एवं घराने को दृष्टिगत रखते हुए उनके कार्यों, योगदानों, उपलब्धियों एवं उनकी वादन शैली पर विविध घरानों का प्रभाव के सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत विषय का चयन किया। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब के विषय में कोई शोध–कार्य नहीं हुआ है तथापि संगीत जगत के अधिकांश लोग उनके सांगीतिक जगत में योगदान से अनभिज्ञ हैं।

उस्ताद फैयाज़ खाँ तबला वादन के अग्रणी कलाकार रहे एवं प्रतिष्ठित कलाकारों में उनका नाम लिया जाता है। उन्होंने अजराड़ा घराने के उस्ताद हिदायत खाँ एवं दिल्ली घराने के खलीफा उस्ताद इनामअली खाँ से तबला वादन की शिक्षा प्राप्त की तथा उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा, सूझ–बूझ, चिन्तन–मनन, वादनशैली, योग्यता एवं वादन विशेषताओं के माध्यम से तबला वादन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान बनाया एवं संगीत जगत में अकथनीय योगदान दिया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–शोध छात्रा ने अपने विषय से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया है जो कि निम्नवत् है–

शोध–प्रबन्ध –

- ❖ तबला–वादन में दिल्ली तथा बनारस घरानों का तुलनात्मक अध्ययन–प्रेम चतुर्वेदी, डॉ0 हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर (मध्य प्रदेश) 2003
- ❖ तबला के बनारस–दिल्ली घराने की वादन शैली एवं विशिष्ट रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन–प्रभाकर लाल श्रीवास्तव, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय (खैरागढ़) 2009

- ❖ दिल्ली घराने के प्रसिद्ध उस्ताद नसीर अहमद खाँ–व्यक्तित्व एवं कृतित्व–आशा सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली) 2011
- ❖ दिल्ली घराने में प्रचलित गीत वाद्यों का सौन्दर्य बोध–शैली चोपड़ा, दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली) 2011
- ❖ दिल्ली शहर के कलाकारों का शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में योगदान (ख्याल गायकी के सन्दर्भ में)–शीतल सैनी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, 2012

एम.फिल. लघु–शोध–प्रबन्ध

- ❖ तबले के दिल्ली घराने की रचनागत विशेषताओं का विवेचनात्मक अध्ययन–मोनिका, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट आगरा, 2013

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि शोध छात्रा ने जिस विषय का चयन किया है उससे सम्बन्धित कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या–शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या निम्नवत् है–

उस्ताद – पु. (फा.) (1) गुरू, शिक्षक, अध्यापक

(2) किसी विषय का बहुत बड़ा पण्डित या ज्ञाता

फैयाज़ – वि. (फा.) उपकार करने वाला, फैज पहुँचाने वाला, दरियादिल, उदारता।

समस्या कथन :– ''ताल सम्राट स्वर्गीय उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली पर विविध घरानों का प्रभाव – एक अध्ययन''

परिसीमांकन :– प्रस्तुत शोध–कार्य की समय सीमा को देखते हुए विषय का गहनतापूर्वक अध्ययन हेतु उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली पर विविध घरानों का प्रभाव – एक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

उद्देश्य :–प्रस्तुत शोध–कार्य के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब के जीवनवृत्त का अध्ययन करना।
2. उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन विशेषताओं का अध्ययन करना।
3. उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली का अध्ययन करना।
4. उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब के वादन में विभिन्न घरानों का प्रभाव का अध्ययन करना।
5. उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब के द्वारा बजाई गई बन्दिशों का अध्ययन करना।
6. उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की शिष्य परम्परा का अध्ययन करना।
7. उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की उपलब्धियों का अध्ययन करना।

अध्ययन स्रोत :– प्रस्तुत शोध–कार्य विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, विभिन्न विद्वानों व कलाकारों के साक्षात्कार द्वारा, दृश्य–श्रव्य सामग्री द्वारा व इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन विधि :– निरीक्षण विधि, साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली विधि व विवेचनात्मक विधि।

अध्ययन के रूपरेखा :– शोध–कार्य को व्यवस्थित रूप प्रदान करने हेतु निम्न अध्यायों में विभक्त किया जाएगा–

भूमिका

प्रथम अध्याय – सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- शोध–प्रबन्ध
- पत्रिकाएं

द्वितीय अध्याय – उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब का जीवन–वृत्त

- जीवन–परिचय
- सांगीतिक शिक्षा
- अकाद्मिक योग्यताओं का विवरण
- व्यक्तित्व की स्वभावगत विशेषताएं
- संगीत के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियां
- तबला–वादन के क्षेत्र में योगदान

तृतीय अध्याय – उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब – घराना एवं बाज

- घराना एवं बाज – अर्थ व व्याख्या
- उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब का घराना

चतुर्थ अध्याय – उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब की वादन शैली एवं उसमें अन्य घरानों का प्रभाव

- वादन शैली
- वादन शैली पर अन्य घरानों का प्रभाव

पंचम अध्याय – उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त बन्दिशें एवं उनका प्रतिलेखन

उपसंहार

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- ❖ ताल प्रबन्ध–पं. छोटेलाल मिश्र
- ❖ तबला पुराण–पं. विजयशंकर मिश्र
- ❖ संगीत में ताल वाद्यों की उपयोगिता–डॉ. चित्रा गुप्ता
- ❖ तबला वादन के घराने एवं परम्पराएं–डॉ. आबान. ई. मिस्त्री